मैं कब तक हँस सकूँगा....?

एक दिन मैं, मेरी आपा और मेरी बहन साथ मिलकर जयपूर में जाने की सोच रही थी। अगले दिन आपा ने वहाँ जाने की टिकट भी मँगवाया था तो मुझे और मेरी बहन ये बात सुनकर बहुत अच्छा लगा, क्योंकि जयपूर हमारी कई दोस्त और रिश्तदार भी हैं। पहले हम जयपूर में रहते थे। परंतु माँ की गुज़र जाने की बाद हमने उस शहर छोडकर यहाँ गुजरात में आया था। मेरी माँ को कानसर थी इस बात मेरी आपा नहीं जानते थे जिस कारण माँ की हालत इतना बिगड़ गया, आखिर उन पर कोई दवा का असर भी नहीं। माँ की मौत के बाद हम वहाँ जयपूर की रिश्तदार ज्यादा बातें कुछ नहीं करती थी जिसकी कारण मुझे उन लोगों की ज्यादा पहचान भी नहीं है। जब आपा ने वहाँ जाने की बात कही तो मुझसे ज्यादा वो खुश हो रही थी उसे मुझसे ज्यादा वहाँ की बारे में पता था। रात भर मैं और मेरी जयपूर की बातें कह रही। हमारी ज्यादा गुस्सा करने वालों से था फिर भी हम जानते थे कि "उनका मन इतना साफ है जितना की गंगा जल की" हम उनके बात की मान रखकर कलकी जाने की तैयारी

के बाद हमने सोने के लिए गई। जब सुबह हुआ तो मैंने बहुत जल्दी उठकर अपने सारी काम कर-कर, हम तीनों ने आपा की गाडी से स्टेशन पहुँच गई। वहाँ से ट्रेइन की टिकट लेकर ट्रेइन के अंदर तब मैंने आपा से पूछा की हम कब तक पहूँचेंगी तो उन्होंने कहा की ज्यादा तो नहीं लगेगी सिर्फ तिन से चार घंटे तक जरूर लगेगी। जब ट्रेइन के अंदर गई तो मैंने अपने थैला से समूसा उठाकर खाना शुरू किया तब तो बहुत सी बारिश का मौसम चल रहा था। बारिश के साथ धर्मागरम समूसे और सोस उसे अच्छा चीज खाने के लिए क्या मिल सकता है। ट्रेइन में और मेरी बहन, ने खूब मस्ती किया रास्ते में हमें एक परिवार मिला जो दिखने में तो बहुत ही अच्छी परिवार के थी। उन लोगों बहुत सारे बातें भी की इनके एक बेटी भी है जिसका नाम नेहा रास्ते में हमें नेहा जैसी अच्छी दोस्त पाकर मुझे बहुत अच्छा लगा। उसकी माँ एक डॉक्टर और आपा शास्त्र थी जो नई नई चीज के बारे में पता कर-कर उसकी नई नई आविष्कार करती हैं। उस काका जब भी

60th Kerala School Kalolsavam, Nov 28 - Dec 1, 2019 _ Kasaragod

Item Code: 642 Participant Code: 3

कुछ बोलता था तो उन की बातों से ही हमें पता चलता है कि वो कितना ज्ञानी है। आपा को यह बात नहीं पता था कि हम इन लोगों से बातें कर रही तो अच्छी खासी हमें ज़रूर डाँठ मिलेगी आपा तो पहले मतलब आगे वाली सीट में बैठा था। और हम लोग तो पीछे वाली सीट में, तब तक तो तीन घंटा बीत भी चुकी थी। मुझे बहुत बड़ी सी भूख लगी थी जब हमने समूसा खाकर आपा की सीट में थैला रखा था। जिसके कारण अगर हमें वापस आपा की सीट में गई तो पक्का हमें ज़रूर डाँठ मिल सकती थी। इसलिए मेरी पूछने लगी की क्या हुआ तुम्हें इतना उदास क्यों बैठा...." दी दी मेरी पेट में चूहे दौड़ रही जिसके कारण मुझे बहुत भूख लग रहा है फिर दी दी मेरी उदास देखकर उनकी थैला से कुछ पैसे निकालकर मेरे लिए पकोड़ा लाकर दे दी। फिर मुझसे कहा की ये बात अगर तुम आपा से कहूँगी तो मेरे साथ मुझे भी डाँठ पडेंगे तो भगवान के लिए ये बात को किसी से भी मत कहना और साथी साथ अगली बार मुझसे भूख लगने की बात

(Note: Graded articles may be published in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

कही तो मेरी पास रही है। कितना भी कहे मेरी दीदी मुझसे बहुत प्यार करती भी है। माँ के चलने के बाद उन्होंने तो मेरी मुझे पाल पूसकर बड़ा किया है। आखिर हमने जयपूर पहुँच गई उस समय मुझे लगा कि मेरी सपना अब पूर्ण होने जा रही हूँ कि मैं अपनी रिश्तदार के साथ मिलकर यानि पूरे परिवार के साथ बैठकर खाना खा सकता हूँ खेल सकता हैं और है सारी बातें भी कर सकता हैं। मैंने कभी परिवार साथ बैठकर खाना नहीं खाया जिसके कारण मुझे परिवारवालों की प्यार या फिर उनकी पहचान नहीं जानता है। तब मैंने अपने पिता से पूछा की हमारी जयपूर में कौन रिश्तदार रहता जिन लोगों का नाम क्या है और वो लोग मेरे क्या लगता है? इन सब सवालों का उत्तर तो मेरी पिता ने मुझे बहुत ही प्यार से कही पहेले तो भापा से अगर हम कुछ भी पूछे या कुछ भी वो मुझसे बहुत गुस्सा करते थे जैसे की मैंने उनकी कुछ बिगाड़ा है। आखिर हम ने जयपूर की रिश्तदार की घर पर पहुँची बाहर से ही पता चलता है कि लोग बहुत अच्छे और नेक

है। आपा से मुझे ये पता चला कि वहाँ हमारी चाचा-
चाची और उनकी बेटी अनन्या भी रहते हैं। हमारी आते
ही वो लोग अन्दर से एक थाली लेकर आई जिसमें
एक नारियल, फूल, चावल, और सिंदूर थी। ये एक
रिवाज थी जब ही परिवारवाले कहीं पर जाकर वापस
आता है तो उन्हें ये तिलक लगाकर ही स्वीकार करता
है। मुझे ये रिवाज बहुत अच्छा लगता था जब हमारी
चाची ने ये थाली लेकर आई तो मैंने सबसे पहले
जाकर खड़ी हुई उन्होंने मुझे बिना कुछ पूछते
तिलक लगाया तो मैंने उनसे पूछा की आप मुझे
जानता है इन्होंने बहुत ही प्यार से कहा, कि तुम शिवानी हो उनके आवाज
सुनने में तो बहुत ही मधुर था फिर मैंने उनसे
पूछा की आपने कभी मुझसे मिली भी नहीं आपने
मुझे पहचान लिया कैसे? बेटा मैंने तुम्हें बचपन में
देखा था अच्छा... ये बात है फिर हमने यानि
मैंने अनन्या के साथ मिलकर बहुत बातें की पहले
तो मैंने कभी किसी से इतना बात नहीं कही होगी।
फिर चाचीजी ने कहा उनके यहाँ पास में एक मंदिर
अगर वहाँ जाकर कुछ भी माँगो वो पूरा हो जाती

परंतु पूरे मन से और निष्ठा से प्रार्थना करना होगा तब वो पूरी हो जाएँगी। फिर मैं, मेरी दीदी अनन्या हम तीनों ने साथ मिलकर मंदिर में गई, वहाँ जाते वक्त अचानक मैं बेहोश हो गया और मेरी नाक से तो बहुत सारा खून भी निकल रहा था। मेरी दीदी रोने और चीखने लगी फिर पापा और चाचा-चाची ने साथ मिलकर मुझे आस्पताल लेकर चली तो डॉक्टर ने कहाँ की ज्यादा चिंता करने की बात नहीं इस बच्ची की शरीर कानसर की शेलस बढ़ने जाने की कारण अब इस बच्ची को कानसर है चिंता करने की कोई बात नहीं चिकित्सा अगर अच्छी से दी तो ये बच्ची जल्दी ही तन्दुरस्त हो जाएँगे। मेरी बहन ही नहीं सब यह जानकर उन्हें बड़ा दुख हुआ खास कर कर मेरी बहन बड़ी अनामा वो मेरी पास बैठने आई उसकी आँखों से ही मुझे पता चला की कुछ तो गड़बड़ है और मैंने उनसे बहुत बार पूछा तो उन्होंने मुझे बताया की मुझे कानसर ये बात सुनकर मैं उदास होकर बैठने लगे और सोची-सोचा मैं सोचने पर गई तो मेरी दीदी से मैं पूछा की

अब जल्द ही मैं भी माँ के पास चली जाऊँगी मेरी चिंता मत करो मेरी पास माँ होगी तुम आपा की ख्याल रखना। तो मेरी दीदी ने मुझसे कहा की ऐसा कुछ भी नहीं होगा जैसा तुम सोच रहे हो तुम्हारी बिमारी चिकित्सा से ठीक कर सकता है तुम्हें रोने की कोई ज़रूरत नहीं है दीदी "मैं कब तक हँस सकूँगी मेरे पास तो अब ज़्यादा वक्त भी नहीं है। तुम ने सुना तो होगा ना हँसी से बहुत सारी लोगों की ज़िंदगी बची है तो तुम्हें चिंता करने की कोई बात नहीं है। दीदी के इस शब्द ने तो मुझे एक नई ज़िन्दगी थी। इसलिए मैं अपनी दीदी के बहुत आभारी हूँ।

संदेश :- अगर हम मरने या कुछ भी करने जा रहे तो अगर हमारी पास आत्मविश्वास और मन की शक्ति हो तो हमें कुछ होने से पहले ही भगवान हमारी रक्षा करेंगी। ज़िंदगी में हमें कभी भी हिम्मत हारनी नहीं चाहिए।